बिहारीजी ने इत्र से होली खेली

लाहौर के एक मन्दिर में कुछ भक्त भगवान श्री कृष्ण की प्रतिमा के सम्मुख आरती कर रहे थे। आरती के बाद पुजारी ने सभी को चरणामृत दिया। भक्तों में नगर के प्रतिष्ठत श्रीविज्ञानी खत्री भी थे, जो सभी से हाथ जोड़कर 'जय श्री कृष्ण' कह रहे थे। तभी उनकी दृष्टि एक साधु पर पड़ी। विज्ञानी जी ने 'जय श्री कृष्ण' कह कर उनका भी अभिवादन किया। लेकिन उन साधु ने उनसे 'जय श्री हरिदास' कहा। पहली बार यह शब्द सुनकर विज्ञानी जी बोले – "क्या कहा 'जय श्री हरिदास'!!! क्या जय श्री कृष्ण कहना बंद कर दिया, साधु जी।"

तो साधु जी ने कहा "बंद नहीं किया, सुधार दिया है। 'श्रीकृष्ण' कहने से श्रीकृष्ण उतने प्रसन्न नहीं होते जितने हरिदासों की जय बोलने से होते हैं। हरि को अपने भक्त अपने से अधिक प्रिय हैं।"

विज्ञानी और उनकी बहन श्यामा ने साधु जी से पूँछा "कहाँ की यात्रा से लौटे हो?"

साधुजी ने कहा, "मैं तो बद्रीनाथ की यात्रा पर जा रहा था लेकिन हरिद्वार में मुझे एक ब्रजवासी मिला उसने मुझे वृन्दावन के बारे में बताया। यह सुनकर मेरा मन भी वृन्दावन जाने को उतावला हो गया। मैंने वृन्दावन में श्रीहरिदास और उनके प्राणाराध्य श्रीबाँकेबिहारीजी के दर्शन किये। विज्ञानीजी क्या कहूँ? इतना रस, इतना आनन्द ....सब कुछ विलक्षण हैं।"

कहते कहते साधु जी अत्यंत भावुक हो गये। विज्ञानीजी और श्यामा दोनों उनकी इस स्थिति को देखकर भाव-विह्वल हो उठे। अगले ही दिन वे भी वृन्दावन को चल दिये। वृन्दावन की लताएँ, पुष्प, जड़ी-बुटीयाँ उनको बहुत अच्छी लग रही थीं। विज्ञानीजी ने अपनी बहन श्यामा से कहा, "इनका इत्र तो बहुत सुगन्धित और कीमती बनेगा।" यह सुनकर श्यामा ने कहा "यदि यहाँ भी अपनी व्यापारिक बुद्धि लगाओगे तो स्वामी हरिदासजी के दर्शन नहीं मिलेंगे।" तो विज्ञानीजी बोले, "यदि व्यापारिक बुद्धि लगाता तो इतना कीमती इत्र क्यें लाता? जानती हो इसकी कीमत एक लाख स्वर्ण मुद्रा है।" श्यामा ने टोका, "मैं तो इसकी कीमत तब जानुंगी जब श्रीहरिदास जी इसे स्वीकार कर लेंगे। बातें करते हुए वे श्रीनिधिवनराज पहुँच गये। दोनों ने निकट पहुँचकर स्वामीजी को प्रणाम किया। स्वामीजी अपने प्रिया-प्रियतम के गायन में मग्न थे। तभी स्वामीजी ने कहा, "लाये हो न भैया **सुगन्ध** (इत्र) श्रीबिहारीजी के लिए।"

विज्ञानीजी ने हड़बड़ाते हुए इत्र की शीशी स्वामीजी की ओर बढ़ाते हुए कहा - "आपने मेरी सेवा स्वीकार की।" परन्तु अगले ही क्षण यह देखकर विज्ञानी को परम आश्चर्य हुआ कि उसकी लायी हूई कीमती इत्र की शीशी स्वामीजी ने यमुनाजी की रज में उड़ेल दी। यह देखकर विज्ञानी को क्रोध आया किन्तु उसकी बहन श्यामा ने इसे संभाला और कहा "संतों की सेवा पर संदेह नहीं किया करते।" विज्ञानी के संदेह को दूर करते हुए स्वामीजी बोले - "बड़ी कृपा है तुम पे श्रीबिहारीजू की......... निधिवन में दर्शन किये हैं श्री बिहारीजू महाराज के ...... दर्शन करियों ....

अनमने मन से विज्ञानी जब बिहारीजी के मन्दिर के आगे पहुँचे तो स्वामीजी के अनुज गोस्वामी जगन्नथजी ने कहा आओ भक्त दर्शन करो। तभी बिहारीजी के सामने से पर्दा हटते ही विज्ञानी जी चीख पड़े और बोले, "देखो बहन ! मेरे इत्र की वही सुगन्ध बिहारीजी के पास से आ रही है और सारा मन्दिर सुगन्ध से सुवाषित हो रहा है।"

श्यामा एकटक होकर श्रीबिहारीजी को अपने नेत्रों में बसाये जा रही थी और विज्ञानी का तनमन नाच रहा था। श्यामा ने धीरे से कहा, "देखते नहीं भैया बिहारीजी के वस्त्र सुगन्ध से सराबोर हो रहे हैं। कितनी सौंधी सुगन्ध चारों ओर फैल रही है। मगर यह सुगन्ध यहाँ कैसे आयी। क्यों कि इत्र को तो स्वामी जी ने यमुना रज में फैला दिया था।

तभी स्वामीजी ने पीछे से आकर कहा "विज्ञानी, क्यों आश्चर्यचकित होते हो? भइया प्रिया-प्रियतम उस समय यमुना पुलिन में होली खेल रहे थे। तो प्रियाजी की पिचकारी कौ रंग समाप्त है गयौ, सो मेरे पास वा समय तुम्हारो यह चोवा ही हतौ। मैंने वा चोवा कू स्वर्ण पात्र में उलट दियौ। प्रियाजी ने अपनी पिचकारी में चोवा भरौ और प्रियतम के ऊपर डारौ। अब वे ही प्रिया-प्रियतम होली खेलते - खेलते यहाँ विराजे हैं। यह सुनकर दोनों की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। और बिहारीजी की कृपा की अनुभूति पाकर श्रीहरिदास जी के चरणों में गिर पड़े। और कहने लगे "स्वामीजी हमें क्षमा करना हमने आप पर संदेह किया।" तभी स्वामीजी बिहारीजी महाराज की ओर देखकर गाने लगे...

सौंधे नहाय बैठी पहिरि पट सुन्दर, जहाँ फुलवारी तहाँ सुखवती अलकें।

Tel :+91-565-2444858
Mob.:+91-9897233358 (Anand Bihari Goswami)
9897919717 (Nikhil Goswami)